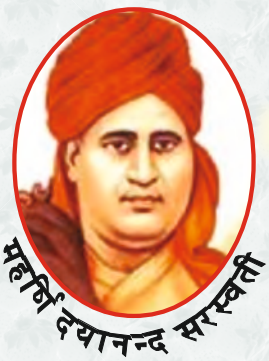

महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वीं जयन्ती 1824-2024

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई 2023 वर्ष 27, अंक 07 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2080 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

श्रावणी पर्व एक चिन्तन

❑ डॉ. गंगाशरण आर्य

भारत वर्ष ऋषियों-मुनियों की पावन धरती होने का गौरव रखता है। हमारे ऋषियों ने समय-समय पर मानव को संस्कारित करते रहने के लिए इन्हें अपना कर्तव्य बोध करवाने के लिए अनेक पर्वो त्योहारों व उत्सवों की एक लड़ी सी बनाई है। इन पर्वों, उत्सवों को मनाने की नियमावली जो हमारे ऋषियों ने दी है उनके माध्यम से हम जाने में ही नहीं अनजाने व अनचाहे भी बहुत से उपकार, नवनिर्माण व धर्म के उत्थान के कार्य कर जाते हैं जो हमें अपने आप साधारण जीवन की दैनिक व्यस्तताओं की अवस्था में कर पाना सम्भव नहीं हो पाता ऐसे ही पर्वों में श्रावणी पर्व तथा रक्षाबन्धन भी एक है। 'पर्व' कहते हैं पूरक तथा ग्रन्थी को। श्रावणी पर्व जीवन में आनन्द भर देता है जिस प्रकार गन्ने में ग्रन्थियों के कारण ही मधुर रस सुरक्षित रहता है वैसे ही वैदिक पर्व मनुष्य के जीवन में संस्कृति और सभ्यता को बनाए रखते हैं।

भारत में (चौमासा) के नाम से प्रसिद्ध चार-महीने ऐसे होते हैं जिनमें वर्षा के कारण अनेक भूमिगत व जहरीले सर्प, बिच्छु, कान खजूरे आदि अनेक जीव भूमि से बाहर निकल आते हैं इस अवस्था में सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीन काल से ही ऋषि-महात्मागण जंगलों, पर्वतों से बाहर निकलकर, नगरों के समीप आकर किसी स्थान को केन्द्र बनाकर आवास करते थे तथा अपने अनुभव स्वाध्याय तथा तप से, परिश्रम से, साधना से उन्होंने जो ईश्वरीय ज्ञान एकत्र किया होता था उसे वह अपनी सेवा सुश्रुषा के बदले जन सामान्य में बांटते थे। आर्य समाजों में भी वही परम्परा स्थापित करते हुए श्रावणी उपाकर्म का विधान किया गया है। इसे श्रावणी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह श्रावण माह भी इन्हीं चार महीनों में आता है। श्रावण मास अत्यधिक वर्षा का महीना होता है। सभी जलाशय, नदी, नाले न केवल भरे होते हैं अपितु उफान पर होते हैं, ऐसे में सभी प्रकार के कार्य बाधित होते हैं चाहे वह कृषि का कार्य हो अथवा व्यापार का। यह उल्लास का पर्व है उल्लास एक ऐसी सुगन्ध है जिसे जितना प्रयोग करो वह बढ़ती ही चली जाती है। यही कारण है कि ऋषियों ने जो सुगन्ध वर्ष भर के प्रयास से एकत्र की होती है। इस पर्व पर वह इसे जन सामान्य में बाँट देते हैं यहीं कारण है कि यूनान, मिस्त्र जैसे राष्ट्रों के नष्ट होने पर भी सर्वाधिक प्राचीन यह भारत आज भी न केवल जीवित है अपितु अब भी विश्व का एक बड़ा भाग इससे मार्गदर्शन पा रहा है। कहने का तात्पर्य है कि श्रावणी नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व मनाया जाता है इसलिए इसका नाम श्रावणी (सावनी) पर्व है और यह परम्परा आधुनिक नहीं अपितु वैदिक काल से प्रचलित है। श्रावणी पर्व आर्यों (हिन्दुओं) का एक महत्वपूर्ण पर्व है। क्योंकि इसका सीधा सम्बन्ध वेदाध्ययन से है। वर्षा ऋतु के चार मास के अन्तर्गत विशेष रूप से वेद परायण यज्ञों का आयोजन किया जाता है। सब वर्ण के लोग इस चौमासे के दौरान विश्राम करते हैं अर्थात् सब के कार्यक्षेत्र में शान्ति होती है व्यवसाय में भी शिथिलता होती है।

वैदिक काल में सब लोग वेद तथा आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय करते थे, कभी प्रमाद नहीं करते थे। कालान्तर में विशेषकर वर्तमान में लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व से, महाभारत युद्ध के पश्चात् वेदों के पठन-पाठन में शिथिलता आने लगी। इसका मुख्य कारण वैदिक-विद्वानों तथा श्रद्धालु श्रोताजनों का अभाव होता रहा और परिणाम यह हुआ कि लोगों की स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति लुप्त हो गई जिसके फलस्वरूप आधुनिक समाज में अनेक स्वार्थियों लुटेरों ने अनगिनत पाखण्डों को जन्म दिया। अत: भोले-भाले, सीधे-सादे लोगों के दिलों में अनेक प्रकार के अंध विश्वास तथा अन्धश्रद्धाओं जैसे शत्रुओं ने घर कर लिया। यह सब स्वाध्याय की कमी के कारण हुआ। आज भी यदि जन साधारण में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत हो जावे तो समाज में फैलते हुए पाखण्डों को रोका जा सकता है तथा धर्म के नाम पर धर्म के भक्षकों को सबक सिखाया जा सकता है। वर्तमान में तो ऋषि तर्पण का लोप हो चुका है तथा उसके नाम पर अनेक प्रकार के पाखण्ड और अन्धविश्वास चल पड़े हैं जैसे श्रावणी के दिनों में सापों को दूध पिलाना, नदी अथवा तालाबों में जाकर स्नान करना, घर की दीवारों पर श्रावण की काल्पनिक मूर्तियाँ बनाकर उनको सेवियां खिलाना, पंडों द्वारा मनघढन्त कथाएं बाँचना इत्यादि। नामसझी की हद हो गई है।

स्वाध्याय में प्रमाद के कारण ही हम साधु, सन्त, महात्मा, गुरु इत्यादि की पहचान करने में असमर्थ होते हैं। वर्तमान में हर गली कूचे

(शेष पृष्ठ 15 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आस्था के दीप जलायें

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

मनुष्य के रूप में जन्म लेना जितना कठिन है। उसे जीना भी उतना ही कठिन है। बाल्यकाल माँ के आंचल में बीत जाता है लेकिन आंचल से बाहर आते ही जीवन कठिन होने लगता है। अच्छे-बुरे अनुभव लेते हम बड़े होते हैं। कहीं माँ छूट जाती है और कहीं अब उन सब उतार चढ़ाव में सहायक होने में असमर्थ होती है?

जीवन में आने वाली कठिनाइयां हमें दु:ख और निराशा के गहन अंधकार में डुबो देती हैं। सिक्के की तरह हार-जीत, सुख-दु:ख, आशा-निराशा, सफलता-असफलता, पाना-खोना, जीवन के पहलु हैं। ऐसे समय में मन में आस्था का दीप जलाने से मन-मस्तिष्क रोशन हो जाता है। ऐसी परिस्थितियों में संघर्ष करना मनुष्य जीवन का प्रमुख उद्देश्य रहता है और यह सब करने, उससे निकल विजय प्राप्त करने की आशा में रहता है। परन्तु कष्ट, तनाव, हताश, क्रोध, हिंसा रूपी अंधेरा हमें उस लक्ष्य से भटकाता है। मानसिक तनाव/अवसाद इतना बढ़ जाता है कि कुछ हममें से लोग हताश हो जाते हैं, जीवन से किनारा कर जाते हैं लेकिन सकारात्मक, नैतिक गुण हमें इन अन्धेरों से लड़ने की प्रेरणा, उत्साह साहस प्रदान करते हैं और अपनी बुराइयों पर विजय प्राप्त करने में हमारी मदद करते हैं।

हर अंधेरी रात के बाद सुबह का सूरज अवश्य निकलता है। उसी प्रकार दु:ख के बाद सुख प्राप्त होता है। लंबे प्रयास के बाद मिली सफलता मन को उत्साह व हर्ष से रोशन कर देती है। देवकी और वरूण का दाम्पत्य टूटने के कगार पर था, क्योंकि वरूण को नशे की लत पड़ गई थी। देवकी ने कई बार समझाया, बच्चों के मन में पड़ने वाले दुष्प्रभाव का भी वास्ता दिया। परन्तु वरूण पर कोई असर ही नहीं पड़ता। हारकर उसने अलगाव का निर्णय ले लिया तब जाकर वरूण की नींद टूटी। उसने सुनीता के समक्ष सुधरने की इच्छा व्यक्त की। देवकी को अंधेरे में उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। दोनों ने मिलकर प्रयास किया। वरूण का दृढ़ संकल्प और देवकी के धैर्य और विश्वास ने हवा का रूख बदल दिया। अब वे सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सूरजमुखी हमेशा सूरज की ओर देखता है। शाम होने पर भले ही मूरझा जाता है। लेकिन पुन: सूरज की ऊष्मा पाकर ऊर्जान्वित हो उठता है। उसी प्रकार हम हमेशा उजाले की ओर अपना रूख करें। निराशा, दु:ख, असफलता रूपी शाम की अवधि अत्यल्प होती है। हमारे जीवन में भी सुखरूपी सूरज का उदय होगा, मन में विश्वास बनाये रखें। पिता की मृत्यु के बाद कविता के घर की हालत से बदहाल हो गई थी। कई बार उसके पास स्कूल की फीस भरने के पैसे नहीं होते थे। मां ने सिलाई करके जैसे-तैसे उसे पढ़ाया। पढ़ाई के साथ-साथ कविता ने एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना शुरु किया। बाद में अनुभव के आधार पर उसकी सरकारी नौकरी हो गई। नौकरी मिलने के बाद उसने सब कुछ संभाल लिया। छोटे-भाई बहन को पढ़ाया। उनका भविष्य संवारा। कई बार निराशाजनक परिस्थितियां सामने आई। पर उसी तरह जैसे बदली कुछ देर के लिए सूरज को ढंक लेती है, आंखे जरूर बरसीं परन्तु कर्तव्यपथ से कदम नहीं डिगे। वर्तमान सुविधाभोगी युग में सफल जीवन के सबके अलग मायने हैं। व्यवहार में मूल्य को तरजीह देने वाले अपने ही कई बार मन को आहत कर जाते हैं। मंहगाई और गलाकाट प्रतियोगिता के दौरे में इंसान विषाद और नैराश्य के दलदल में फंस जाता है। ऐसे में यदि मन में आस्था के दीप जला लें तो अंधेरों से निकलना आसान हो जायेगा।

तो क्या आप भी तैयार हैं आशा, उत्साह और विश्वास के साथ मन के अंधेरों से लड़ने के लिए? अपने जीवन के कड़वाहट भरे पलों की गठरी बनाकर मानस पटल से उतार फेंकिये और **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** कहते हुए चलें उजालों की ओर। प्रण ले कि कैसी भी परिस्थिति हो मैं प्रतिदिन यज्ञ करूंगा/करूंगी। यज्ञ सभी सुखों का मूल है। यह यज्ञ करने के बाद ही अनुभव होगा।

-पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मत में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर 12000/-रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

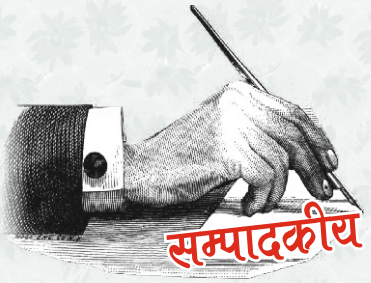

क्या केवल स्वाध्याय करना ही धर्म है?

हमने यहां शंका का समाधान करने का प्रयत्न किया है इसलिए पत्र के रूप में यह विचार हर उस पुत्री के लिए है जो धर्म में थोड़ी भी रूचि रखती हो ताकि उसे सत्यज्ञान हो सके।

तुमने कुछ शंकाओं का समाधान मांगा है। तुम्हारा पहला प्रश्न यह है कि क्या रामायण का पढ़ना, चौपाइयों का सुनना, गाना या सुनना और उनको कंठस्थ करना, क्या सत्यार्थ प्रकाश का पढ़ना, क्या इसी प्रकार से किसी भी धार्मिक पुस्तक का पढ़ना अपने आप में धर्म है और क्या हम इन को पढ़कर या गाकर कुछ धर्म करते हैं? और दूसरा प्रश्न यह है कि राम नाम रट कर या हरे-हरे, गोपाल-गोपाल कहते हुए धर्म के मार्ग पर अग्रसर होते हैं या नहीं? देखने में तो यह दो प्रश्न हैं परन्तु वास्तविक रूप में यह एक ही प्रश्न है। इससे पहले की इस प्रश्न का उत्तर दिया जाए हम इस बात का ध्यान करें कि हम जब ईश्वर की स्तुति करते हैं तो ईश्वर के गुणों का क्यों वर्णन करते हैं? हम कहते हैं कि ईश्वर दयालु है, कृपालु है, न्यायकारी है, सत्य चित् आनन्द है, तेरी लीला अपरम्पार है, तू यह है, तू वह है इत्यादि। क्या परमात्मा अपनी तारीफ का भूखा है? क्या ईश्वर अल्पज्ञ है और उसे अपने गुणों का ज्ञान नहीं और हमने ईश्वर को उसके गुणों से अवगत कराना है। नहीं यह बात नहीं है। तो फिर हम ऐसा क्यों करते हैं? हम ऐसा इसलिए करते हैं कि एक चोर का मित्र चोर होगा। यदि किसी चोर की किसी साधु से दोस्ती हो जाएगी तो थोड़े दिनों के बाद साथ छूट जाएगा जब दोनों को एक दूसरे की वास्तविकता का पता चल जाएगा तो वह एक दूसरे से दूर हो जाएँगे। परन्तु एक चोर की चोर से मित्रता पक्की हो जाएगी। एक साधु की साधु से मित्रता पक्की हो जाएगी। मदिरा पीने वाले आपस में एक मण्डली बना कर बैठ जाएंगे और न पीने वाले एक ओर। मांसाहारी पार्टी एक ओर जुट जाती है और शाकाहारी दूसरी ओर। Birds of a feather flock together एक विचार वाले व्यक्ति हमेशा इकट्ठे रह सके हैं और यदि विचारों में मतभेद होगा तो मनों में मतभेद आ जाएगा और मित्रता टूट जाएगी। बिल्कुल ही घनिष्ठता नहीं रहेगी। मनुष्य की ईश्वर से तभी मित्रता हो सकती है यदि उसमें वह गुण आ जाएं जो ईश्वर में हैं और ईश्वर भी उसी व्यक्ति से मित्रता रखेगा जिसमें ईश्वरीय गुण हों जो व्यक्ति न्यायकारी नहीं, ईश्वर उसे अपने निकट नहीं आने देगा। जो व्यक्ति सत्य नहीं बोलता ईश्वर का मित्र नहीं हो सकता। हम इसलिए ईश्वर के गुणों को याद करते हैं ताकि उसके गुणों को जानकर उन गुणों को अपने अन्दर धारण करने का यत्न करें ताकि हमारी ईश्वर के साथ सहृदयता हो जाए। हमारे गुण एक जैसे हो जाएं। ताकि हमारी ईश्वर से मित्रता पक्की हो जाए। इस कारण हम लोग प्रार्थना से पहले ईश्वर स्तुति करके उसके गुणों का गान करते हैं।

अब आओ फिर अपने प्रश्नों की ओर चलें। क्या रामायण की चौपाई केवल पढ़ने से या कण्ठस्थ करने से या सुनाने से हमने कोई धर्म किया, रामायण में भगवान् राम के गुणों का वर्णन है। उनके गुणों का जानना अत्यावश्यक है। भगवान् राम के जीवन की झांकी को जाने बिना केवल राम-राम रट कर हम कैसे जान सकते हैं कि राम कौन थे, उनका क्या चरित्र था? उन्होंने क्या किया और क्या नहीं किया? रामायण का पढ़ना, राम नाम का जप करना अपने आप में कोई धर्म नहीं। रामायण को पढ़कर उस मर्यादा पुरुषोत्तम के जीवन को समझ कर उसकी एक-एक बात पर अनुसरण करना धर्म है। जो व्यक्ति रामायण पढ़ने के पश्चात् यह धारण कर लेता है कि मैंने माता-पिता की आज्ञा का पालन करना है। वास्तविक रामायण तो वह जानता है। चौपाई बोलने वाला व्यक्ति नहीं। जो स्त्री यह कहती है कि चाहे वनवास हो मैं तो अपने पति के साथ रहूँगी। रामायण तो उस स्त्री ने जानी है। रामायण केवल पढ़ने की पुस्तक नहीं अपितु मनन कर, चिन्तन कर धारण करने वाला ग्रन्थ है। राम-राम जपने से कुछ न होगा। राम के चरित्र पर अनुसरण करने से जीवन लाभ होगा। सत्यार्थ प्रकाश में जो स्वामी दयानन्द जी ने इस संसार में आकर कैसे समय व्यतीत करना है? धर्म क्या है, सत्य असत्य क्या है? आदि विषयों पर प्रकाश डाला है। इन विषयों को पढ़ कर आप एक उपदेशक तो बन सकते हैं, एक दार्शनिक तो बन सकते हैं, एक अच्छे वक्ता बन सकते हैं परन्तु यदि आपने अपने जीवन को संवारना है, सुपथ की ओर जाना है तो इन पर लिखी बातों को अपने जीवन में धारण करना होगा। केवल इनको पढ़ना या नाम का जाप करना आपको कहीं भी नहीं ले जाएगा। एक डाक्टरी पुस्तक पढ़कर आप एक अच्छे, सुयोग्य डाक्टर तो बन सकते हैं और यदि एक डाक्टर ऐसी किताब को पढ़ेगा तो और भी अच्छा डाक्टर बन जाएगा परन्तु यदि आप उन किताबों को बार-बार पढ़ते जाएं, लाखों बार पढ़ते जाएं तो भी आपका रोग कम नहीं होगा। रोग निवारण के लिए तो उस पुस्तक में लिखी दवाई का प्रयोग करना पड़ेगा। तब एक दिन ऐसा आएगा जब आपका रोग ठीक हो जाएगा। रामायण का पाठ आपको वक्ता तो बना सकता है परन्तु आपके जीवन को सुधार नहीं सकता। सुधार के लिए तो रामायण में जो कुछ लिखा है, सत्यार्थ प्रकाश में जो कुछ लिखा है, उस पर अमल करने से होगा। परन्तु यह अवश्य देखना होगा कि जो कुछ तुम सीख रहे हो क्या वह वेदानुकूल है? वह वेद विरुद्ध तो नहीं? वेदानुकूल को गले लगाना होगा और वेद विरुद्ध का त्याग करना होगा। केवल तब ही धर्म के मार्ग पर अग्रसर हुआ जा सकता है।

(डॉ. आनन्द अभिलाषी जी की पुस्तक से प्रेरित)

अजय टंकारावाला

आवश्यक सूचना

टंकारा समाचार इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❐❐❐

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❐❐❐

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❐❐❐

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❐❐❐

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❐❐❐

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❐❐❐

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❐❐❐

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

क्षितीश वेदालंकार ग्रंथावली की समीक्षा

गुरुकुल काँगडी ने आर्य समाज व स्वदेश को अनेक विद्वान् दिए हैं। उन्हीं में से स्नातकीय परीक्षा की भी उपेक्षा करके सन् 1939 में हैदराबाद सत्याग्रह को नेतृत्व देने वाले एक आर्य-रत्न को देश ने पण्डित क्षितीश के नाम से जाना था। उनके लेखन-सम्पादन, प्रवचन-भाषणों को सभी मनीषियों ने सदा मुक्त-कंठ से सराहा था। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व में सहृदय साहित्यकार, प्रबुद्ध पत्रकार, ओजस्वी वक्ता, वास्तविक राष्ट्र-भक्त, मौलिक इतिहास-वेत्ता, साहसी यायावर, स्वाभाविक समाज-सुधारक और सच्चे हिन्दी-संस्कृत-प्रेमी का अद्भुत सम्मिश्रण था। अपने अन्तिम समय में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रमुख साप्ताहिक 'आर्य-जगत्' के माध्यम से उन्होंने 13 वर्ष तक समाज को सही दिशा दिखाने का श्रेयस्कर कार्य सम्पन्न किया था।

पण्डित क्षितीश जी सामयिक-शाश्वत, प्रान्तीय-राष्ट्रीय, सामाजिक-धार्मिक, राजनीतिक-आर्थिक और गंभीर-विनोदी सभी प्रकार के विषयों पर मौलिक चिन्तन प्रस्तुत करते थे। नीरस तथ्य-परक सामग्री भी उनकी अभिव्यक्ति से सरस साहित्य बन जाती थी। ऋषि दयानन्द उनके लिए सतत मार्गदर्शी राष्ट्रवादी आप्त पुरुष थे। उनके विचारों का प्रभाव उनके लेखन में सर्वत्र स्पष्ट दिखाई देता है। उनके लगभग समग्र लेखन-कर्म को वर्तमान काल में सब के समक्ष लाने के लिए हितकारी प्रकाशन ने 'पण्डित क्षितीश वेदालंकार स्मृति न्यास के सहयोग से क्षितीश-ग्रन्थावली' नाम से पुनः प्रकाशित किया है। उनकी 24 पुस्तकों को विषयानुसार सात खंडों में रखा गया है। और 25वाँ ग्रन्थ 'पंजाब तूफ़ान के दौर से' (Storm in Panjab) पृथक् से उपलब्ध है। ग्रन्थावली के सात खण्ड, उनके विषय एवं पुस्तकें इस प्रकार हैं:-

1. सिद्धान्त अंक: इस खण्ड में पाँच पुस्तकें हैं- (क) निजाम की जेल में (ख) आप्त राष्ट्र पुरुष (ग) दिव्य दयानन्द (घ) आर्यसमाज की विचारधारा (ड़) ईश्वर: संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों की दृष्टि में।

2. हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान अंक: (क) जातिभेद का अभिशाप (ख) हिन्दी ही क्यों? (ग) भारत को हिन्दू (आर्य) राष्ट्र घोषित करो (घ) कश्मीर झुलसता स्वर्ग।

3. अभिनन्दन अंक: (क) चयनिका (ख) राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा।

4. यात्राएं, उपन्यास एवं हास्य-विनोद अंक (क) बांग्लादेश की स्वतन्त्रता के बाद, (ख) पंडिम के दुर्गम पथ पर (ग) उत्तराखण्ड के पथ पर। (घ) स्वेतलाना (ड़) गांधी जी के हास्य-विनोद।

5. ललित साहित्य अंक (दैनिक हिन्दुस्तान के अग्रलेख) (क) फिर इस अंदाज से बहार आई (ख) ओ मेरे राजहंस (ग) देवता कुर्सी के।

6. आर्य-जगत् के अग्रलेख अंक (क) हिन्द की चादर में दाग (ख) राष्ट्रीय एकता की बुनियादें (ग) असलियत क्या है?

7. राष्ट्रीयता अंक: इस खंड में पण्डितजी द्वारा सम्पादित आर्य-जगत् साप्ताहिक के वे अग्रलेख/ सम्पादकीय हैं, जिनका प्रकाशन उनके दिवंगत होने के उपरान्त 'राजनीति नहीं राष्ट्रनीति' नाम से सन् 1999 में हुआ था। इस ग्रन्थ का वैशिष्ट यह है कि, तीन दशक के बाद भी ये आज की राजनीति को ही निरूपित करता प्रतीत होता है।

मान्यवर! आप एक प्रतिष्ठित वैदिक विद्वान हैं और आर्य- साहित्य के मर्मज्ञ भी। आशा है कि आप अपनी रुचि और विशेषज्ञता के अनुसार इस ग्रन्थावली पर अपनी मूल्यवान सम्मति देने के लिए सुविधानुसार समय निकालने का कष्ट करेंगे। इसके अतिरिक्त विश्वास है कि आप अपने उपलब्ध माध्यमों से इसे सही पाठकों तक पहुंचाने में सहयोग भी अवश्य करेंगे!

प्राप्ति स्थान-
हितकारी प्रकाशन समिति,
मो. +91 7014248035,
+919414034072, Email:
aryaprabhakar@yahoo.com
आपका हार्दिक आभार

- डॉ. वेद-व्रत आलोक

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान, मो. 9672223865, 9416078595

साबी नदी के किनारे स्वस्थ जलवायु युक्त **आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया** में छठी कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ है तथा प्रथमा से आचार्य तक गुरुकुल पद्धति से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से संबंधित पाठ्यक्रम नि:शुल्क पढ़ाया जाता है। गुरुकुल में योग्य प्राचार्य तथा अनुभवी प्राध्यापिकायें अध्यापन कार्य में रत है। सुन्दर छात्रावास, गौशाला, यज्ञशाला पुस्तकालय, व्यायामशाला के प्रबन्ध के साथ आर्ष पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल में आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, देशभक्ति तथा धार्मिक शिक्षा योगाभ्यास आदि द्वारा कन्याओं का स्वर्णिम विकास करवाया जाता है, प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क करें-प्राचार्य, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401

ऋषि दयानन्द जी की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा द्वारा संचालित
श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल (आर्य पद्धति कक्षा 7 से 10वीं तक)
प्रवेश प्रारंभ

कक्षा-6 (प्रथमा प्रथम खण्ड)
कक्षा-7 (प्रथमा द्वितीय खण्ड)
कक्षा-8 (प्रथमा तृतीय खण्ड)
कक्षा-9 (पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष)
कक्षा-11 (उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष)
कक्षा-उपदेशक (10वीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद)

प्रवेश हेतु आवेदन करें: 15 जून 2023 से 10 जुलाई 2023

गुरुकुल में क्यों पढ़े?- ❑ ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए, ❑ सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए, ❑ अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौति देने के लिए, वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए, ❑ गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए, ❑ आश्रम व्यवस्था को जानने के लिए, राजधर्म को जानने के लिए, ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए, जगत् की उत्पति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए, ❑ बन्ध न और मोक्ष विषय को जानने के लिए, ❑ धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए, ❑भारत वर्ष में फैले मत-मतान्तरों में सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए, ❑भारतीय संस्कृति को समझने के लिए, ❑ युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए, ❑ धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए, ❑ विश्व में मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए, ❑ वैचारिक क्रान्ति के लिए।

सुविधाएँ- ❑ आवास व्यवस्था, ❑ उच्च गुणवतायुक्त भोजन (पौष्टिक), ❑ नि:शुल्क शिक्षा, ❑ गुणवतायुक्त शिक्षा, ❑ स्वच्छ वातावरण, ❑ खेल-कूद का मैदान, ❑ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार, ❑ प्रत्येक बच्चे का मानसिक, शारिरीक नैतिक व भावात्मक विकास।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय
डाक टंकारा, जिला मोरबी (सौराष्ट्र गुजरात) 363650, मो. 09913251448

उदात्त जीवन का आधार: संस्कार

❒ डॉ. धर्मवीर सेठी

संस्कृत देवभाषा, संस्कार, देवभाषा ज्ञान का प्रतिफल, संस्कृति संस्कार का व्यावहारिक पक्ष और सांस्कृतिक, उस संस्कृति का मंचन। वस्तुत: ये सभी शब्द और भाव परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। यह वाक्य प्राय: सुनने को मिलता है कि 'अमुक बालक के व्यवहार को देख कर पता चलता है कि उसके माता-पिता ने उसे कितने अच्छे संस्कार दिये हैं। बात सही है क्योंकि **'माता निर्माता भवति'**-माँ ही तो श्रेष्ठ बालक का निर्माण करने वाली होती है। शिवाजी का प्रसंग आए तो जीजाबाई को अवश्य याद किया जाएगा। अभिमन्यु की घटना के साथ उसकी माँ सुभद्रा का स्मरण अनायास हो जाएगा। राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने के लिए न्यौछावर होने वाले वीर, धार्मिक क्षेत्र के धर्मगुरु, समाज कल्याण के लिए अग्रणी एवं अन्य युग-पुरुष जो भी हों, उनके पीछे किसी न किसी रूप में मातृ-शक्ति की प्रेरणा रही है। शायद इसलिए वेदोक्त सोलह संस्कारों में प्रथम तीन संस्कार तो माँ की कोख से ही सम्बन्धित है, वहीं से उदात्त स्वभाव वाली सन्तान का निर्माण आरम्भ होता है।

यही आचरण की, संस्कार की पक्की नींव हैं। भवन (मानव देह) अपने आप आलीशान बनेगा और उसे 'सुसंस्कृत' की संज्ञा से अलंकृत भी किया जाएगा। महाभारत में मानव जन्म के महत्व को इन शब्दों में आंका गया है-

न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्

अर्थात् मनुष्य से बढ़कर और कोई श्रेष्ठ है ही नहीं। महाकवि तुलसीदास ने तो यहाँ तक कह दिया-

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थहिं गावा॥

मनुष्य जन्म अनेक पुण्यों का फल है। परा-शक्ति के बाद इन्सान ही जगत् का संचालक है।

इस दुर्लभ, अद्वितीय शरीर का निर्माण करने हेतु माँ का दायित्व और भी बढ़ जाता है। अस्तु! उन सोलह संस्कारों में प्रथम तीन अर्थात् **गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन** तो बालक गर्भावस्था में रहने पर ही सम्पन्न किये जाते हैं। माँ की सोच, उसके आचरण, खान-पान सबका प्रभाव कोख में पलने वाले बच्चे पर पड़ता है।

फिर होता है जन्म **जातकर्म संस्कार।** यदि शास्त्रोक्त विधि से सभी संस्कार निष्पन्न हो तो बालक पर उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। परन्तु खेद इस बात का है कि संस्कार के मर्म को समझने का प्रयत्न ही नहीं किया जाता है। पाँचवाँ संस्कार है **नामकरण।** कितना सुन्दर विधान है इस संस्कार को मनाने का। पिता बालक की नासिका-द्वार से बाहर निकलती हुई वायु (श्वास) का स्पर्श करके पूछता है-

'कोऽसि, कतमोऽसि, कस्यासि, को नामासि'

अर्थात् तुम कौन हो, कहाँ से आए हो, किसके हो और तुम्हारा नाम क्या है? फिर उसे एक विशिष्ट नाम दिया जाता है। शास्त्र कहता है कि नाम सार्थक होना चाहिए। नाम के अनुकूल यदि उसका आचरण भी हो, तो 'सोने पे सुहागा'।

सूची में छटा संस्कार है **'निष्क्रमण'** अर्थात् बालक को घर के बाहर जहाँ वायु, स्थान शुद्ध हो, वहाँ भ्रमण कराना, घुमाना। वस्तुत: इससे होता है सूर्य की प्रथम रश्मियों से बालक का स्पर्श। **'अन्नप्राशन'** सातवां संस्कार है। जो बालक को अन्न पचाने की शक्ति के लिए किया जाता है।

' चूड़ाकर्म' अर्थात् प्रचलित **'मुण्डन'** संस्कार तदनन्तर आठवाँ संस्कार है। उत्तरायण काल, शुक्ल पक्ष में जिस दिन आनन्द-मंगल हो, उस दिन प्राय: संस्कार को करने का विधान है। बालक के लिए 'कर्णवेध' संस्कार में कान और नासिका छिदवाने का विधान है जिसे जन्म से तीसरे या पाँचवे वर्ष में सम्पन्न कराया जाता है। **'ओं भद्रं कर्णेभि: श्रृणुयाम देवा'** कितना सटीक मन्त्र है।

और दसवाँ संस्कार है **'उपनयन'** जिसे **'यज्ञोपवीत'** संस्कार भी कहा जाता है। वस्तुत: इसके तीन धागे मातृ ऋण, पितृ ऋण और आचार्य ऋण की स्मृति को सदा बनाए रखते हैं 'उप' अर्थात् समीप और 'नयन' अर्थात् होना या ले जाना। आचार्य के समीप उपस्थित रहना। इसलिए सम्भवत: इसके बाद का संस्कार है **'वेदारम्भ'**। वेद का अर्थात् ज्ञानोपार्जन का प्रारम्भ। ध्यान रहे ज्ञान की कोई सीमा नहीं। **'समावर्त्तन'** संस्कार में ब्रह्मचर्यव्रत, साङ्गोपांग वेदविद्या, उत्तम शिक्षा और पदार्थ-विज्ञान को पूर्ण रीति से प्राप्त कर गृहाश्रम को ग्रहण करने के लिए विद्यालय को छोड़ घर की ओर आना होता है।

तेरहवाँ संस्कार है 'विवाह संस्कार'। इसे 'पाणि-ग्रहण' भी कहा जाता है। इस संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि 'संस्कारित' सन्तानें यहीं से पैदा होती हैं। ब्राह्मण और संन्यासी इन्हीं गृहस्थियों के द्वार पर ही आते हैं **'भिक्षां देहि'** इन्हीं के द्वार पर बोला जाता है। वस्तुत: गृहस्थाश्रम वालों का समाज के प्रति विशिष्ट दायित्व बन जाता है। पति-पत्नी का परस्पर समर्पण इस आश्रम को और सुदृढ़ बनाता है। 'Husband' हस्तबन्ध का ही पर्याय है।

फिर बारी आती है **'वानप्रस्थ'** संस्कार की। इसे तीसरा आश्रम भी कहा जाता है। ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के बाद। विधान यह है कि जब पुत्र का भी पुत्र हो जावे अर्थात् जब गृहस्थी पौत्र वाला बन जाए तो उसे वन की ओर चलने की तैयारी करनी चाहिए। शास्त्र के अनुसार:

ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेद्, गृही भूत्वा वनी भवेत्। वनी भूत्वा प्रव्रजेत्॥ -शतपथ ब्राह्मण। व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥ (यजु: 19/30) 50 से 75 वर्ष की आयु का काल वानप्रस्थ कहा जाता है। -**'जीवेम शरद: शतम्'** के अनुसार चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास-25, 25 वर्ष की अवधि के निर्धारित किये गये हैं। जब गृहस्थ वानप्रस्थ होने की इच्छा करे तब अग्नि-होत्र को सामग्री सहित लेकर ग्राम से निकल जंगल में जितेन्द्रिय होकर निवास करे-

अग्निहोत्र समादाय गृह्यं चाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यं नि:सृत्य निवसेन्नियतेन्द्रिय:॥ (मनु. अ. 6) क्या ही अच्छा हो कि परिवार में रहते हुए भी मुखिया वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करे।

पन्द्रहवाँ संस्कार है 'संन्यास' (संन्यास आश्रम) जिसमें संन्यासी के महत्वपूर्ण कर्त्तव्य की इस प्रकार विवेचना की गई है:

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

धर्म और विज्ञान में विरोधः एक भ्रान्ति।

❑ रामनिवास गुणग्राहक

धर्म और विज्ञान के इतिहास पर दृष्टि डालें तो वह पारस्परिक विरोध ही नहीं, घात-प्रतिघातों से भरा पड़ा है। ऐसे में उक्त विरोध को भ्रान्ति कहना चौंकाने वाला है। आज स्थिति बदल गई है, भूतकाल के विरोध को वर्तमान पर थोपना अज्ञानता कम, मूर्खता अधिक मानी जाएगी। वर्तमान का सर्वोत्तम सदुपयोग यही है कि हम भूतकाल की भूलों व गलतियों को सुधार कर, उनके कारणों का निवारण करके, मानवता को कल्याण-पथ पर प्रवृत्त करें। आज जब धर्म और विज्ञान आपस की भूलों एवं घात-प्रतिघातों से मानवता का अनचाहा अहित करके, आत्म-ग्लानि से भरकर प्रायश्चित करना चाहते हैं, तो प्रत्येक बुद्धिजीवी व श्रद्धालु का कर्त्तव्य बनता है कि एक उचित वातावरण का सृजन करके इन्हें एक अवसर दें कि मानवता के वक्षस्थल इन्होंने जो सदियों तक रहने वाले घाव दिये हैं, उन पर कुछ शान्तिदायक मरहम लगा सकें। सच तो यह है कि अब ये समझ गए हैं कि हमारे द्वन्द-युद्ध में पिसती हुई पीड़ित यह मानव जाति कभी भी हमें गन्दी नाली में फेंक सकती है। इस भस्मासुरी भूमिका में कौन स्वीकार करेगा इन्हें? आज विज्ञान भी बचपने को छोड़कर समझदारी की बातें करने लगा है, उधर धर्म भी अन्ध विश्वासों एवं बाह्य आडम्बरों को लबादा उतारकर तर्क के धरातल पर खड़ा होकर विज्ञान के साथ कदम मिलाकर ही नहीं, उसका मार्ग दर्शन करने के लिए स्वयं को तैयार कर चुका है। ये दोनों मिलकर माँ मानवता की सेवा संयुक्त रूप से करना चाहते हैं। विज्ञान और धर्म मानव की दो सहज प्रवृत्तियाँ हैं। एक का सम्बन्ध मस्तिष्क से है तो दूसरी का हृदय से। मस्तिष्क अर्थात् बुद्धि तर्क प्रधान होती है और हृदय भावनाओं का सागर है। बुद्धि का काम महर्षि गौतम न्याय दर्शन में बताते हैं-**'सदसत् विवेकवती-बुद्धिः'** अर्थात् बुद्धि सत्य असत्य का विवेक करती है। चूँकि बुद्धि प्रकृति के सत्त्व गुण-प्रधान होने से संसार के पदार्थों का तात्त्विक ज्ञान करा देती है। हमें बता देती है कि इस पदार्थ के गुण दोष ऐसे हैं। इसके बाद मनुष्य का आत्मा जो हृदय में निवास करता है, वह अपना हित-अहित, लाभ-हानि व सुख-दुःख देखकर कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का निर्णय करता है। ये दोनों प्रक्रियाएँ मानव-जीवन के लिए परमावश्यक हैं, किसी एक के अभाव में मानव-जीवन पूर्ण नहीं कहा जा सकता।

लक्ष्यमेकं:- धर्म और विज्ञान का समझपूर्ण संलाप कुछ यूँ व्यक्त किया जा सकता है। धर्म, विज्ञान को कह रहा था-देखो विज्ञान! तुम मानव के तर्कशील मस्तिष्क में निवास करते हो और मैं उसके श्रद्धा-सिञ्चित हृदय में। अगर हम गत शताब्दियों की तरह एक दूसरे पर प्रहार करते रहेंगे तो चोट मानव के व्यक्तित्त्व पर ही होगी। या हम अपना-अपना रास्ता अलग कर लेंगे तो भी मानव का अस्तित्त्व विखण्डित होकर बिखर जाएगा। ये सच है कि आज के मानव का रुझान तुम्हारी ओर कुछ अधिक है, लेकिन तुम्हें यह मानना पड़ेगा कि जैसे विवेक शून्य मानव ने क्षुद्र स्वार्थों के लिए मेरा स्वरूप बिगाड़ डाला, वैसे ही श्रद्धा व संवेदनाओं से रहित मानव तुम्हारा इतना भयंकर दुरुपयोग करेगा कि आने वाली सन्तति तुम्हारे नाम से घृणा करने लगेगी। मैंने विवेकहीन मानव के साथ हजारों वर्ष बिताये हैं, लेकिन तुम हृदयहीन मानव को सौ वर्ष भी नहीं सम्भाल पाओगे। विज्ञान! मैं तुम्हें एक रहस्य की बात कहना चाहता हूँ, वैसे तो यह सम्भव नहीं, लेकिन माना तुमने गर्वोन्मत्त होकर मुझे अछूत घोषित कर दिया या मिटा डाला तो निकट भविष्य में ही तुम ऐसे अनर्थ कर डालोगे कि डबडबाई आँखों से प्रायश्चित्त का सागर प्रवाहित करते हुए इतिहास के उसी कालखण्ड को ढूँढ़ते फिरोगे जहाँ से तुमने मुझे तिरस्कृत किया या मिटाया होगा। विज्ञान! हम दोनों का उद्देश्य मानव मात्र ही नहीं, प्राणि मात्र का कल्याण है। मुझे पता है कि अब तुम बहुत समझदार हो गए हो, आओ हम दोनों मिलकर ऐसा प्रयास करें कि जब मानव प्रयोगशाला में प्रवेश करें तो उसके हृदय में श्रद्धा का सागर संवेदना की हिलोरें लेता रहे और जब वह धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न करने लगे तो विवेक की आँखें बन्द न कर ले। आज यह निर्णय करना सरल नहीं कि श्रद्धा शून्य मानव प्रयोगशाला में जाकर अधिक अनर्थ करेगा या विवेक शून्य अन्ध विश्वासी होकर तथा कथित धर्मयुद्ध द्वारा।

विज्ञान की स्वीकारोक्तिः- धर्म! तुम सौ प्रतिशत सच कहते हो। ये सामञ्जस्य का युग है, हम देख रहे हैं कि एक दूसरे को गालियाँ देकर चुनाव जीतने वाले तथा कथित राजनेता, सत्ता सुख के लिए गठबन्धन कर लेते हैं, सुदूर देशों के, एक दूसरे से अपरिचित आतंकवादी जन संहार जैसे पावन ध्येय के लिए एक दूसरे के पूरक क्यों नहीं हो सकते। सच है परमेश्वर ने जब हम दोनों को मानव देहरूपी छोटे से पिण्ड में एक साथ मिला दिया है, तो इस विशाल ब्रह्माण्ड में हम मिलकर क्यों नहीं रह सकते? हमें मिलकर रहना होगा, मानवता को हम दोनों की महती आवश्यकता है। धर्म! मैंने सृष्टि का कण-कण कुरेद डाला, इस संसार में एक-दूसरे के विरुद्ध गुण-धर्म वाले तत्व एक-दूसरे को मिटाने के स्थान पर पारस्परिक न्यूनताओं के पूरक बनकर स्वअस्तित्व को धन्य कर रहे हैं। सृष्टि-संचालन में सब पदार्थों की सनिष्ठ भूमिका देखकर मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि यहाँ नष्ट करने के लिए कुछ भी नहीं है। तुम सच कहते हो धर्म ! मैं भी यह स्पष्ट देख रहा हूँ कि श्रद्धा व संवदेना से हीन निष्ठुर मानव बहुत शीघ्र अपना व मेरा अस्तित्व मिटा डालेगा। प्रलय की प्रतीक्षा में प्रयत्त पुरूष को इस प्रच्छन्त पागलपन से रोको। घौंस के लिए ध्वंस का सामान जोड़ने वाली यह मूढ़ मानव स्वयं भी ध्वस्त होकर रहेगा-धर्म! बचाओ इसे।

द्वौ देहे हृदयैकता:-धर्म और विज्ञान, का यह संवाद मानव की संचेतना को सोचने पर विवश करता है। सच में विवेकहीन मानव ने धर्म का स्वरूप बिगाड़ कर जितना अनिष्ट विगत शताब्दियों में किया था, आज का तथा कथित विज्ञानवादी श्रद्धा और संवेदना से पृथक होकर उससे कहीं अधिक अनर्थ कर रहा है। तथाकथित धर्म ग्रन्थों के प्रमाण देकर पुराने धर्माचार्य जितना शोषण करते थे, आज के विज्ञानवादी 'पेटेण्ट' का डण्डा घुमाकर क्रूर शोषण ही नहीं कर रहे, अपितु विद्या पर वैसा ही एकाधिकार स्थापित कर रहे हैं, जैसा कि कभी जाति-ब्राह्मणों ने धर्मशास्त्रों पर किया था। दोनों स्थितियाँ मानव से जीने का अधिकार छीनने जैसी ही हैं। ये बनी इसीलिए कि धर्म को नेत्र देने वाला विज्ञान और विज्ञान को संवेदना देने वाला धर्म दोनों को जोड़ने वाले तन्तु का सर्वथा अभाव था। अब प्रभु कृपा से हमें वह तन्तु मिल गया है आवश्यकता यही है कि धर्म के नाम पर अन्धविश्वासों में जकड़े हुए श्रद्धालु और विज्ञान के नाम पर कीटे तर्कवाद में उलझे कतिपय महानुभाव अपने-अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर इन दोनों के एकत्र को स्वीकार करके एक नए युग का प्रारम्भ करें। आज विज्ञान धर्म के मूल

(शेष पृष्ठ 14 पर)

पानी पूछे प्यास से, बता तू किस जात से

❒ गिरीश त्रिवेदी

उसने उस बालिका से पूछा कौन सी जात की है लड़की? उस बिटिया ने सहजता से उत्तर दिया "बाबा मेरी जाति मारवाड़ी है।" वह बूढ़ा सर खुजलाता ही रह गया और मैं दूर खड़ा मुस्कुराया।

आपको क्या लगता है, किसी को उसकी जाति पूछने का मतलब क्या होता है? क्या यह प्रश्न एक उन्नत और प्रगतिशील समाज में पूछे जाने लायक प्रश्न है या क्या यह पिछड़ी, सड़ीगली, बुरी और रूढ़ीवादी मानसिकता के कारण पूछा जाने वाला प्रश्न है। यही प्रश्न हमारी सरकार ने भी देश की 121 करोड़ जनता को भी पूछा है तो आप हमारे देश की सरकार को किस मानसिकता की मानते हैं।

जाति मतलब होता क्या है। क्या किसी काम को करने से वह उसकी जाति हो गयी जैसे लोहे का काम करो तो लोहार और सोने का करो तो सुनार, चमड़ा का काम किया तो चमार और पंडिताई की तो पंडित ये सब जातियां कैसे हो सकती है ये तो हमारी मात्र व्यवसायिक पहचान है। अब तो इलेक्ट्रिशियन, ड्रायविंग, शेयरब्रोकर, डॉक्टर आदि के भी पेशे विकसित हुए हैं। तो ये नई जातियां गिनी जानी चाहिए। मगर सड़ियल रूढ़ीवादी विचारधारा वाले मात्र अपने ही गणित से जाति का निर्धारण करते हैं। वे देखते हैं व्यक्ति किसके घर जन्मा है। बस इतना काफी है और कर देते हैं मनुष्य और मनुष्य के बीच अलगाव का बीजा रोपण।

याद करें भारत के आधारभूत धर्म ग्रन्थ वेद, उपनिषद्, दर्शन, गीता और गुरुग्रंथ साहब आदि कोई भी जन्मना जाति प्रथा को सही नहीं ठहराता। पूर्व काल में हमारे देश में हुए सभी महापुरूषों जैसे गुरुनानक देव जी, चैतन्य महाप्रभु, रामदास, मीरा, पीपा, धन्ना, राजिया, नरसी, जलाराम, कबीर, दादु, एकनाथ, रविदास, नामदेव, तुकाराम और ज्ञानेश्वर आदि भी एक स्वर में जन्मना जाति प्रथा की घोर निन्दा करते हैं। हमारे देश के आधुनिक महापुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हंसराज, बाबा साहेब अम्बेडकर, आदि ने जन्मना जाति प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के लिए अपने-अपने तरीके से जीवन भर प्रयत्न किये। आज देश भर में हमारे जितने भी धार्मिक कार्यक्रम होते हैं कहीं कोई जातिगत वर्गीकरण नहीं किया जाता है। फिर भी हम और हमारी सरकार जाति क्यों पूछते हैं?

जन्मना जाति प्रथा को अपनाए रखना पिछड़ेपन और समाज के मानसिक विकार की निशानी है गत कुछ शताब्दियों में भारत पतन के मार्ग पर चल पड़ा और परिणाम स्वरूप देश सहस्त्राधिक वर्ष तक पराधीन भी रहा और पराधीन हो जाने का कारण भी सामाजिक एकता की कमी ही थी। हमने पराधीन होने की करारी थप्पड़ भी खाई फिर भी हम जाति प्रथा, ऊँच-नीच और छुआछूत को अपनाए रहे और फिर परिणाम स्वरूप लोग मुस्लिम और ईसाई बनते गये। इतना सब कुछ जानने के बाद भी हम आज भी उसी जाति प्रथा और छुआछूत को अपनाए रहेंगे तो हम से बड़ा मूर्ख कौन होगा। अब तो प्रायश्चित का समय है, सामाजिक एकता का समय है। जिन-जिन के पूर्वज अपमानित होकर विधर्मी हो गये थे उनसे हमें क्षमा मांगने का समय है। उन्हें फिर से घर लाकर सम्मानित करने का समय है। हमारे वे भाई कब तक अपने पैतृक धर्म से वंचित रहेंगे। समाज ने कोई गलती की थी तो समाज को ही उसे सुधारना भी होगा।

यह भी देखने में आता है कि समाज तो आपस में एक रस होता जा रहा है लेकिन हमारे शातिर राजनेता जातिगत विद्रोहों में समाज को झोंक रहे हैं। कोई जाटों का चहेता बनता है तो कोई यादवों का। कोई छोटों को छोटा ही रखकर खुद को मोटा ताजा हाथी जैसा बना रहा है तो कोई छद्मवेष धारण कर मुस्लिमों को ही पुचकारने और भड़काने जाता है। प्रिय देश वासियों इस तरह के स्वार्थी नेताओं ने देश की जनता को खूब छला है। इस तरह जाति आधारित राजनीति करने वाले एवं मात्र मुस्लिम में तुष्टिकरण से चुनाव जीतने की आशा रखने वाले नेता समाजिक एकता के दुश्मन है। राजनीति का शुद्धिकरण करने के लिए जो भी जाति आधारित राजनीति करे उन्हें कतई अपना वोट न दें। जो ईमानदारी से मात्र राष्ट्रहित की बात करे और काम करे वही हमारा वोट पाने का अधिकारी हो।

जातियों को इसलिये भी जीवित रखा जा रहा है ताकि आरक्षण का निर्धारण ठीक से किया जा सके। श्री अम्बेडकर ने आरक्षण का प्रावधान दस वर्षों के लिए रखा था। आरक्षण का अर्थ होता है साधनों की कमी है अत: जिन्हें देना अनिवार्य है उन्हें पहले मौका दिया जाए। यदि आज आजादी के बाद पैंसठ वर्षों तक में भी हम शिक्षा और रोजगार के इतने अवसर पैदा नहीं कर पाये कि सबको आसानी से मानचाहे चुनाव करके आगे बढ़ने का मार्ग सुलभ हो। शिक्षा और रोजगार जैसी प्राथमिक बातों में भी हम नहीं सम्भले तो आजादी के बाद आज तक हमने किया क्या? आरक्षण को जीवित रखने का एक ओर अर्थ होता है कि देश प्रगति नहीं कर पा रहा है। हमारे पास साधन सीमित हैं। अत: अभाव के अन्धकार में से ही छीन झपट कर अपना हिस्सा प्राप्त करना इस देश की जनता की नियती है।

अभाव को पैदा करके आरक्षण को जीवित रखना समाज में फूट डालने का साधन है और नेताओं का चुनाव जीतने का हथियार है। हमें सरकार ऐसी चाहिये जो प्रचुर मात्रा में उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये ताकि प्रत्येक के लिए मन चाहा चुनाव करने का विकल्प हों। हमसे जाति पूछने की सरकार की नीति के अंडा मंसा कुछ भी हो लेकिन हमें भी हमारी जाति मालूम होनी ही चाहिये ताकि पूछने वाले को हम बता सकें की हमारी जाति कौन सी है? जाति का प्रश्न आते ही आप सोचने लग सकते हैं कि मेरी जाति परमार या महार या तेली या जाट या ब्राह्मण या पटेल है। लेकिन यह उत्तर पूरी तरह गलत होगा। याद रखें पूरे भारत शास्त्रोक्त है कि हम सब की जाति आर्य है। आर्य का अर्थ होता है श्रेष्ठ व्यक्ति संस्कारी व्यक्ति। यहाँ तक कि हम भारतीयों के सम्प्रदाय अलग-अलग हो सकते हैं लेकिन मूल से हम सब एक हैं। हमारे पूर्वज एक थे। हम सभी का रक्त एक है। कोई बाहर से आया हुआ नहीं है। सबकी जड़ें मिट्टी में गड़ी हैं। भारत ही हम सब की माँ है और आर्य ही हम सबकी जाति है। इस बात में पूरी सत्यता है अत: अब हमें सामाजिक दोषों को मिटाकर प्रायश्चित करना अनिवार्य है। भारत की प्रगति के लिए, भारत की खुशहाली के लिए पूरी जनता को एक रस, समरस हो जाना आवश्यक है। तथाकथित जातियों के आवरण को अब बस हम ढोल बन्द करें। अब जरा रविदास जी की बात भी देख लें।

जन्म जाति को छोड़कर, करनी जान प्रधान।
यही वेद को धर्म है-कहे रविदास बखान॥
रविदास जनम के कारण होत न कोई नीच।
नर को नीच कर डारे है, ओछे कर्म की कींच॥

-496, शनीवार पेठ, इलिना अपार्ट, पुणे (महा.)

माँ का प्रशिक्षण और कर्त्तव्य बोध

❒ श्रीमती शन्नादेवी

अध्यापक, अभियन्ता, चिकित्सक, अभिनेता, संगीतज्ञ, नर्तक, प्रबन्धक सब के लिए योग्य प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। उन्हें विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय पर्यन्त कई प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाता है। उन्नत हवाई जहाज, टेलिवीजन, कंप्यूटर तथा गाय, घोडा, आम, गेहूँ आदि के विकास हेतु अनुसन्धान किया जाता है। भौतिक योजनायें मनुष्य को आवश्यक हैं, परन्तु जिस मनुष्य के लिये ये सब अभिप्रेत है, उस मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने के लिए योजना नहीं बनाई जाती। भगवती वेदमाता ने उदघोष किया है- **"मनुर्भव जनया दैव्य जनम्"**- 'तुम सब आकृति के साथ मनुष्य की प्रकृति को भी अपनाओ। उत्तम मनुष्य हो कर देवताओं को जन्म दो।' कोई जड पदार्थ अथवा मनुष्येतर जीव देवों को पैदा नहीं कर सकता।

संसार के सब मनुष्य माताओं से ही जन्म लेते है। यह कार्य पुरुष के सामर्थ्य से बाहर है। नारी ही सन्तानों की जननी, पोषिका और पालिका है। प्रशिक्षण केन्द्रों में इन्जीनियर, चिकित्सक, प्रबन्धक प्रशिक्षित किये जाते हैं। परन्तु सदाचार, शिष्टाचार और नैतिकता की शिक्षा का एकमात्र प्रशिक्षण केन्द्र माँ है। कहा गया है-**"प्रशस्ता धार्मिकी माता विद्यते यः सः मातृमान्।"** गर्भावस्था से लेकर शिक्षा समाप्ति पर्यन्त जो सन्तान माता से निर्मित होती है, वह मातृमान् है। जन्म देने से जननी बन सकती है, परन्तु प्रारम्भिक काल में नैतिक ओर आध्यात्मिक शिक्षादात्री ही माता है। आधुनिक युग में मातृशिक्षा के अभाव से चारों दिशाओं में भ्रष्ट राजनेता, भ्रष्ट सन्यासी, भ्रष्ट न्यायाधीश, भ्रष्ट व्यवसायी, कृषक, सैनिक भर गये हैं। महिलायें मोहग्रस्त और विलासी हो जाने से सन्तानों का मार्गदर्शन करने मे असमर्थ हैं। माँ बनने का प्रशिक्षण विस्मृत-सा हुआ है। **"माता निर्माता भवति"**-यह उक्ति कहीं सुनाई नहीं देती है।

एक बार अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द से एक देवी ने निवेदन किया-'स्वामीजी, मैं अपने पुत्र को विवेकानन्द बनाना चाहती हूँ। उसको किस विश्वविद्यालय में प्रविष्ट कराऊँ? स्वामीजी ने हँस कर उत्तर दिया-'बहन जी! गर्भधारिणी जन्मदात्री माँ की तपस्या से साधु और सदाचारी सन्तान जन्म लेते हैं। इसलिये वह विश्वविद्यालय आप स्वयं हैं। वैदिक ऋचा में मातृत्व की महिमा प्रतिध्वनित होती है-**अम्वितमे नदीतमे देवीतमे सरस्वती। अप्रशस्ता इव स्मसि प्रशस्तिममव नस्कृधि।।** (ऋ. वे. 2.41.16)। हे विदुषी माँ। आप उत्कृष्ट अध्यापिका, उपदेशिका और निर्देशिका हैं। हे माँ! हमारे जीवन-पथ को विस्तारित करो। पिता और अध्यापक सन्तानों को शिक्षा देने के पूर्व माँ उनके वर्णोच्चारण और शिष्टाचार की शिक्षा देकर विद्यादात्री की भूमिका प्रस्तुत करती है। शैशवावस्था में माता के अमृत उपदेश से सन्तान जीवन भर प्रभावित रहती हैं। माँ की भाषा उनकी मातृभाषा बनती है। माँ की वाणी उनके लिये महौषधि और अक्षयनिधि है। अमेरिका के प्रथम और यशस्वी राष्ट्रपति जार्ज वाशिंटन ने एक आम सभा में कहा था-'आज मैं जो कुछ भी हूँ, उस का श्रेय मेरी मां को है। मृत्युशय्या में उन्होंने मुझे उपदेश दिया था कि मैं जीवन-भर नशा सेवन न करुँ। उस समय मेरी आयु पंद्रह साल की थी। माँ के उपदेश का मैंने जीवन भर पालन किया।' फ्रान्स के शासक नेपोलियन के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने देशवासियों से पूछा था-"देश के लिये एक सौ सुशिक्षित नारी प्रदान करो, मैं देश का कायाकल्प कर दूँगा।" आदर्श मातृशक्ति ही देश को समृद्धि दे सकती है।

नारी राष्ट्र-यज्ञ की संयोजिका है-**"स्त्री ही ब्रह्मा वभूविथ"** (अथर्ववेद) कर्त्तव्यनिष्ठ, सदाचारी नागरिक नारी की तप और साधना का फल है। यक्ष के प्रश्न के उत्तर में युधिष्ठिर ने कहा था-**"माता गुरुतरा भूमेः"**-माँ भूमि से भी अधिक वंदनीया है। पिता की मृत्यु के बाद माता ही पिता का स्थान ले सकती है परन्तु पिता कभी माता के बाद उसका कर्त्तव्य नहीं निभा सकता। यही कारण है कि महर्षि मनु ने उद्घोष किया है- **उपाध्यायात् दशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता। पितृदशशतं माता गौरवेण अतिरिच्यते।।** -एक आचार्य दस अध्यापक के समान, सौ आचार्य पिता के समान और सहस्त्र पिता एक माता के समान समझना चाहिए। मदालसा गर्भावस्था में गाया करती थी-**"शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि संसार माया परिवर्जितोऽसि"**-'रे गर्भस्थ पुत्र तू शुद्ध है, तु बुद्ध है, संसार-माया से मुक्त है। इन संस्कारों के कारण तीन संतान त्यागी, संन्यासी बन गये पति ने जब कहा कि इस प्रकार वंश कैसे चलेगा? तब चतुर्थ सन्तान अन्य संस्कारों के कारण सर्वगुण सम्पन्न क्षत्रिय हुआ।

राजा उत्तानपाद किसी कारणवश अपनी सन्तान ध्रुव को अपने गोद से अलग कर दिया। रोते हुई पुत्र माता सुनीता के पास गया। माता ने कहा, पुत्र! तुम पितृस्नेह से वंचित हो गये। कोई बात नहीं अब तुम असली पिता, हम सबके परमपिता प्रभु के आश्रय में रहो। जीवन भर सुख-आनन्द पाओगे। माता का उपदेश पालन करके ध्रुव इतिहास में अमर हो गया। माता शकुन्तला ने पुत्र भरत को साहसी, वीर बनाने के लिये बाल्यकाल से जंगल के भयानक पशुओं के साथ युद्ध करने को कहा। कालान्तर में भरत प्रसिद्ध क्षत्रिय बने। नेपोलियन जब गर्भस्थ थे, उनकी माता सेना शिविर में जाकर परेड देखती थी। उस समय उसका रोम-रोम राष्ट्ररक्षा के लिये हर्षित होता था। गर्भावस्था में प्राप्त संस्कार ने नेपोलियन को एक महान योद्धा बनाया। माता सुभद्रा ने वीर अभिमन्यु को, माता जीजाबाई ने वीर शिवाजी का जीवन निर्माण किया था।

गर्भाधान और गर्भधारण की अवस्था में माता एक पवित्र यज्ञ की विदुषी होता रहती है। गर्भाधान के समय माँ जैसी संतान पाने की इच्छा रखती है-**"तन्मना बीज गृह्णीयात्"**- तन्मय होकर बीज ग्रहण करती है। माँ के पेट में जो सन्तान है, उसका दो दिशाओं में निर्माण होता है-शारीरिक विकास और मानसिक विकास दोनों विकास हेतु क्रमशः 'पुंसवन संस्कार' और 'सीमन्तोन्नयन संस्कार' का विधान है। जब तक सन्तान मां के गर्भ में है, तब तक उसके शरीर और मन को अपनी इच्छानुसार ढाला जा सकता है। जो माताएं सन्तान के जन्म के बाद उसके बिगड़ जाने को देख कर रोया करती है, उन्हें समझ होना चाहिये कि यह कष्ट उन्हें इसलिये झेलना पड़ता है क्योंकि जिस समय बच्चे को ढालने का था, उन्होंने उसको खो दिया।

गर्भस्थ शिशु कण्ठ स्वर को भी पहचान सकता है, इसका परीक्षण अमेरिका, यूरोप, चीन आदि देशों के मनोवैज्ञानिकों और चिकित्सकों ने किया है। गर्भावस्था के शेष काल में साठ महिलाओं पर परीक्षण किया गया। आडियो टेप द्वारा तीस महिलाओं को अपनी माता का कण्ठस्वर और तीस को दूसरी महिला का कण्ठस्वर सुनाया गया। अपने माता का स्वर सुनते समय गर्भ का स्पन्दन बढ़ गया। अपरिचित महिला के बोलते समय स्पन्दन घट गया।

कुम्हार कच्ची मिट्टी में घड़ा आदि बनाते समय इच्छानुसार पदार्थ प्रस्तुत करता है। मिट्टी सूख जाने से उसमें क्षमता नहीं रहती। उस प्रकार गर्भावस्था और जन्म लेने के बाद पाँच-सात साल तक शिशु का शरीर-तत्व और मनस्तत्व माता की साधना के आश्रय में रहता है।

प्राचीन समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों ने सूक्ष्म दृष्टि से मातृत्व की महत्ता को समझा था। उन्होंने तदनुसार नारीशिक्षा की दिशा निर्धारण किया था। परिणामस्वरूप दीर्घजीवी, बलवान और विद्वान संतति उत्पन्न होने के साथ समाज का चहुँमुखी विकास सम्भव हुआ था।

ईशावास्यम्, 139, शहीदनगर, भुवनेश्वर (ओडिशा)

200 Years of Maharishi Dayanand Saraswati Ji

❑ **Arun Kumar Gupta**

On the occasion of inauguration of year-long programs to mark the beginning of the 200th year of the birth anniversary of Maharishi Dayanand Saraswati and the completion of the 150 years of the establishment of Aryasamaj, at Indira Gandhi Indoor Stadium, Delhi. While addressing the audience, the Prime Minister was on stage along with the Governor of Gujarat Mr. Acharya Devvrat Ji, Mr. Suresh Chandra Arya, Mr. Dharmapal Arya, Mr. Vinay Arya (all of them were dignitaries of Arya Pratinidhi Sabha – Delhi) along with the cabinet colleagues of PM Modi namely – Mr. Suresh, Ms. Meenakshi Lekhi, Mr. Arjun Ram Meghwal, were present on this occasion of Maharishi Dayanand's 200th birth anniversary.

The event was historic and also an opportunity to create future history. This is the fruit of inspiration for the future of humanity and the whole world.

Swami Dayanand ji's ideal was "Krinvanto Vishwamaryam", that is, we should make the whole world better, we should communicate the best ideas and human ideals in the whole world. Today in the 21st century when the world is embroiled in many controversies, surrounded by violence and instability; at this time, the path shown by Maharishi Dayanand ji communicates hope to crores of people. In such an important period, this auspicious festival of Maharishi Dayanand ji's 200th birth anniversary is going to last for 2 years and it is a pleasure that the Government of India has also started this festival.

For the welfare of humanity, this continuous practice of yagya, is taking place. While addressing the audience, Prime Minister Modi was narrating that it is his good fortune that the holy land on which Maharishi Dayanand ji took birth, he also got the good fortune to be born there and the culture he got from that soil, that inspired and attracted him towards the ideals of Maharishi Dayanand Saraswati for which he bowed down with reverence at the feet of Swami Dayanand Saraswati ji.

When Maharishi Dayanand was born, the country was losing its aura, its glory, its self-confidence and everything after being weakened by centuries of slavery at the hands of Britishers as well as the inferiority complex that prevails in a society, it becomes natural for ostentatiousness to replace spirituality and faith in human life.

Let's see the one who is confident. Such a person tries to live on the basis of pride. In this situation, Maharishi Dayanand ji came forward and revived the messages of the Vedas in the society and he gave direction to the society with his arguments. He proved this by repeatedly telling the people that the flaw is not in India's religion and traditions,but the flaw is that we have forgotten their true form and are filled with distortions. Imagine at a time when our own Vedas are translated into foreign languages and attempts were being made to fabricate foreign narratives to humiliate us on the basis of those fake interpretations, many attempts were made to corrupt our history and tradition, then this effort of Maharishi Dayanand ji proved to be a great life-saver. He came as a new life force in the society in the form of Booti. PM Modi further said, we have to walk on the path of duty.

150 years back Maharishi ji must have faced so many difficulties in showing the way to the society. The evils that were blamed on religion were removed by Swamiji with the light of religion. Mahatma Gandhi told with great pride that our society owes a lot to Swami Dayanand ji and his declaration against untouchability is the biggest gift among them. Maharishi ji emerged as a logical and effective voice against oppression of women and fought discrimination faced by them resulting in a campaign for women's education as they were forced to be deprived of education and respect.

Shri Swami Dayanand ji had blown this bugle when equal rights for women were a distant thing even in western countries. It was unusual to stand up for women in any way, that's why his journey led to creation of Arya Samaj 150 years ago.

Even after so many years, we remember Maharishi ji as he was pivotal for our independence and his contributions have left an immortal impact on the Indian history. The birth anniversary has brought a new virtuous inspiration. The mantras that he had given for religion then, the dreams which were dreamed for the society, today it is moving ahead with full faith in them as he had invoked the Vedas.

Today the country is proud of its heritage with utmost self-respect and the citizens are saying with full confidence that along with bringing modernity in India, we will also enrich our traditions, heritage as well as development to reach new heights as elaborated by PM Modi.

Generally when it comes to religion in the world, its scope is limited only to worship, faith,customs, methods, but in the context of India, the meaning and implications of religion are completely different. Vedas have defined dharma as a complete way of life, here the first meaning of dharma is considered to be duty. Pitru dharma, matri dharma, putra dharma, desh dharma, kaal dharma. It has not been limited to only worship and people have taken responsibility for every aspect of the nation and society to take a holistic and inclusive approach.

If we go into philosophy, then we will find new intellectuality, in policy and politics, Mahatma Vidur, till Bhartrihari and Acharya Chanakya, many sages continued to define the ideas of India. Great Mathematicians like Aryabhatta and in the field of science also there are countless names like Kanad and Varah Mihir from Charak to Sushrut.

We come to know that how big a role has been in keeping that ancient tradition alive, how wonderful their confidence must be. Swami Dayanand Saraswati ji not only made a path in his life, but he also created a lot of institutions and systems to carry his revolutionary ideas and inspired people. He Institutionalized every idea linked with the institution and made them alive, thereby working positively in different fields. He himself had established the Paropakarini Sabha, even today it is taking forward the Vedic tradition through publications and Gurukulas. Be it Kurukshetra Gurukul, Swami Shraddhanand Trust or Maharishi Dayanand Saraswati Trust, these institutions have created so many dedicated youth for the nation.

Similarly, various organizations inspired by Swami Dayanand are working with service spirit to serve the poor children for their

future and this is our culture, our tradition.

We get restless, there is pain. PM Modi further remembered when there was an earthquake in Gujarat in 2001. It was a disaster which would be etched in our memory for years to come. At that time Jeevan Prabhat Trust's role in social work and relief.

Today we move forward with policies and efforts without discrimination in the country. Seeing that the service of the poor, the backward and the deprived is the first yagya for the country, with the mantra given to the underprivileged, a house for every poor, their respect, better medical facilities for every person, the daughters of the country today work w without any restriction from defense security to startups, till now they are giving speed to the nation in every role. Today daughters are being deployed in Siachen, fighter plane Rafale is also flying, Government has removed the restrictions on the admission of daughters in military schools. Along with modern education, Swami Dayanand ji had also advocated for an education system molded in the Indian environment through Gurukulas, which the country has strengthened its foundation through the new National Education Policy. Swami ji had given one more mantra, in very simple words he told who is mature after all? Whom would you call mature? It is very poignant, Maharishi ji had said that the person who receives the least and the one who contributes the most. He is mature, you can imagine how easily he had said such a serious thing, this life mantra of his has faced so many challenges. It can also be seen in the context in that century when words like Global Warming Climate Change were not even born, no one could think of these words. Where did the realization come from? The answer is our Vedas which are dedicated to the very secretive nature and environment. He deeply understood the knowledge of the Vedas. He was a saint of knowledge, so his message was ahead of his time. When the world is talking about sustainable development, then the path shown by Maharishi ji puts the ancient life philosophy of India in front of the world and presents the way of solution. In the field of environment, India is playing the role of a torchbearer for the world today. We live the global mission based on the vision of harmony with nature. It is a matter of pride for us that in this important period, the countries of the world have entrusted the responsibility of the presidency of the G-20 to India. We are taking the environment forward as the agents of the G-20 who can play an important role as taking the responsibility of connecting people with modern perspective and duties with our ancient philosophy. He was dedicated to a comprehensive campaign related to natural farming. We have to take natural farming village-based farming from village to village, growing millets, jowar, etc. that we are familiar with and We have now given a new nomenclature to Millets to increase its global identity and to make the country's Millets famous worldwide.

In our Yagya coarse grains play an important role because we use that which is best for us. Along with Yagya, all coarse grains Shri Anna should be included in the life and diet of the countrymen as much as possible and become a part of their daily diet, for this we should also awaken the new generation and you can easily do this.

Swamiji lit the flame of patriotism within many freedom fighters. It is said that an English officer came to meet him and asked him to pray for the English rule to remain in India forever. Dayanand ji inspired innumerable great men Lokmanya Tilak, Netaji Subhash Chandra Bose, Veer Savarkar, Lala Lajpat Rai, Lala Hardayal, Shyamji Krishna Verma, Chandrashekhar Azad, Ramprasad Bismil, lakhs of freedom fighters and revolutionary Maharishi Ji, who can never pray for the empire. Mahatma Hansraj started Dayanand Anglo-Vedic School and Swami Shraddhanand ji, the founder of Gurukul Kangri, thus, so many personalities got inspiration from Swami Dayanand Saraswati ji. PM Modi said that he is confident that Arya Samaj will continue to organize these yagya for the nation and the society, and will continue to spread the light of yagya for humanity. Next year, the 150th year of establishment of Arya Samaj is also going to start. He also congratulatee all the great people of Arya Pratinidhi Sabha, and the way program was planned, he got a chance to come and see everything. All the Arya samajs were congratulated for celebrating the birth anniversary of Maharishi Dayanand Saraswati ji at such a massive scale and contributing towards the welfare of the Indian society.

Note:- The writer is President of Arya Samaj Dayanand Marg, City Chowk, Jammu.

ठा. विक्रम सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ के संदर्भ में

सभी आर्य बंधुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य रत्न ठा. विक्रम सिंह इस वर्ष 19 सितंबर 2023 को अपने जीवन के 80 वसंत पूर्ण करने जा रहे हैं। महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा, वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए किए गए उनके अतुल पुरूषार्थ तथा वैदिक विद्वानों, संन्यासियों, आचार्यों व आर्य संस्थाओं के संरक्षण व संवर्धन के लिए उनके द्वारा किए जा रहे महनीय प्रयासों को देखते हुए आर्य नेताओं व विद्वज्जनों की दिल्ली में हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि 80 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में उनका एक भव्य समारोह में अभिनंदन किया जाए। उनके लिए भेंट किए जाने वाले अभिनंदन ग्रंथ की तैयारी के लिए आर्य जगत के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री की अध्यक्षता में एक संपादक मंडल भी गठित किया गया है। आर्य समाज के सभी नेताओं, मनीषियों, विद्वानों, आचार्यों, आचार्याओं, उपदेशकों आदि से अनुरोध है कि ठा. विक्रम सिंह जी के संबंध में यदि आपके पास कोई संस्मरण हो, किसी कार्यक्रम के फोटोग्राफ हों अथवा उनके व्यक्तित्व-कृतित्व से संबंधित जानकारियां हो, व्यक्तिगत अनुभव हों तो तुरंत टाइप करवाकर या हस्तलिखित रूप में उसे हमारे साथ साझा स्पीड पोस्ट अथवा ई-मेल द्वारा उपरोक्त पते पर करने हेतु अनुरोध है। इसी प्रकार वैदिक सिद्धांतों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता, महर्षि दयानंद व आर्य समाज का स्वतंत्रा संग्राम में योगदान, शिक्षा व राजनीति के विषय में महर्षि दयानंद का चिंतन, महर्षि दयानंद का राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विद्वज्जनों से अपने लेख भेजने हेतु निवेदन है। आर्य कवियों से भी अनुरोध है किया जाता है कि आप भी ठाकुर विक्रम सिंह जी के जीवन से संबंधित अपनी काव्य रचना शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें।

-डा. आनंद कुमार आई.पी.एस.,
संयोजकः ठाकुर विक्रम सिंह अभिनंदन ग्रंथ समिति,
मो. 9810764795

વેદ વિષે આટલું જરથી _જાણો! – ભાગ 2

આ જ્ઞાન અને ઉચ્ચારણના આધારે અન્ય મનુષ્યોને વેદોની શિક્ષા આપવા માટે આ ઋષિઓએ સૌ પ્રથમ ભાષાના નિયમો બનાવ્યાં. આમ ભાષાની ઉત્પત્તિનું મૂળ પણ વેદમાં જ છે.

મહાપુરુષોને જેમ સત્કર્મો કરવાની પ્રેરણા પોતાના અંતઃકરણમાંથી મળે છે તેમ આ ઋષિઓને પણ માનવમાત્રને વેદોની શિક્ષા આપવા માટેની પ્રેરણા તેમના અંતઃકરણમાંથી મળી. સમય જતા ઋષિઓ દ્વારા આપવામાં આવેલ વેદ જ્ઞાનનો વ્યાપક પ્રચાર થયો. આમ માનવ સંસ્કૃતિની શરૂઆત થઈ. આમાંથી જે તેજસ્વી વિદ્વાનોએ વેદો મંત્રો ઉપર ઊંડું ધ્યાન ધરી તેમની સમાધિષ્ટ અવસ્થામાં જે વેદ મંત્રોના અર્થ જાણ્યાં, તે વિદ્વાનો તે મંત્રોના "ઋષિ" કહેવાયા. આમ વેદ ઋષિઓ "મંત્ર દ્રષ્ટા" હતા, અને નહીં કે "મંત્ર કર્તા."

સત્ય ૬, વેદ સાચા અર્થમાં વ્યાપક છે.

વૈદિક મંત્રોનું અર્થઘટન કયા સંદર્ભમાં કરવામાં આવે છે તે અનુસાર દરેક વેદ મંત્રના અનેક અર્થ નીકળી શકે છે. આમ, વેદમાં દરેક પ્રકારનું જ્ઞાન સમાવિષ્ટ છે. વેદ મંત્રના દરેક શબ્દનું અર્થઘટન તેની "મૂળ ધાતુ" અનુસાર જ થવું જોઈએ, અને નહીં કે નિત્ય ક્રમમાં કરવામાં આવતા સર્વ સામાન્ય અર્થથી. જો આમ કરવામાં ન આવે તો અર્થનું અનર્થ થઈ જાય છે.

સંસ્કૃતમાં 'ગો' ધાતુનો વાસ્તવિક અર્થ છે 'ગતિમાન'. પણ કેટલાંક મુર્ખાઓ બધાં જ વેદમંત્રોમાં 'ગો' ધાતુનો અર્થ 'ગાય' કરી મંત્રોના ખોટા અર્થ કરે છે., વેદમાં માત્ર આધ્યાત્મિક જ્ઞાન જ નહીં, પણ શ્રેષ્ઠ જીવન જીવવા માટેનું જ્ઞાન, આરોગ્ય અને ઔષધિઓ સંબંધી જ્ઞાન, કુટુંબ અને સમાજનું જ્ઞાન, અર્થશાસ્ત્ર અને ગણિતનું જ્ઞાન, ભૌતિકશાસ્ત્ર અને રસાયણશાસ્ત્રનું જ્ઞાન, એમ બધાં જ વિષયો પરનું જ્ઞાન સમાવિષ્ટ છે. વર્ષો પ્રયાસ કર્યા બાદ હું હજુ પણ એ વિષયની શોધમાં છે કે જેને વેદમાં આવરી લેવામાં આવ્યો ન હોય. વેદમાં બધાં જ પ્રકારનું જ્ઞાન – ભૌતિક વિજ્ઞાન, રસાયણ વિજ્ઞાન, સમાજ શાસ્ત્ર, ધર્મ શાસ્ત્ર, ગણિત, ઈજનેરી વિદ્યા – તેના મૂળભૂત સ્વરૂપમાં છે. વેદમાં જહાજ અને વિમાન બનાવવાની રીતો પણ છે. વેદમાં ગણિતની દશાંશ પધ્ધતિ પણ છે. વેદમાં ગુરુત્વાકર્ષણ અને વિદ્યુતશક્તિનું જ્ઞાન પણ છે.

- ઋગ્વેદમાં ભૌતિક અને આધ્યાત્મિક વિષયોનું જ્ઞાન છે
- યજુર્વેદમાં મનુષ્યના યોગ્ય કર્મોનું જ્ઞાન છે.
- સામવેદ ભક્તિ અને ઈશ્વર ચિંતનનો વિષય છે.
- અથર્વવેદમાં આ ત્રણેય વેદોના અમૂલ્ય જ્ઞાનને વ્યવહારમાં ઉતારવાની – જ્ઞાન, કર્મ અને ચિંતન – પદ્ધતિનું જ્ઞાન છે.

સત્ય ૭ વેદમાં તર્ક અને વિજ્ઞાન વિરુદ્ધ કાઈ જ નથી. વેદ શ્રેષ્ઠત્તમ આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનો જ નહીં, પણ ભૌતિક તત્વજ્ઞાનનો પણ ભંડાર છે. મધ્યયુગમાં લખાયેલાં ઘણાં ધાર્મિક ગ્રંથોથી વિપરીત, વેદમાં પૃથ્વી સપાટ નથી પણ ગોળ છે. વેદમાં પૃથ્વી સૂર્યની પરિક્રમા કરે છે. વેદ અનુસાર ચુંબકીય ધ્રુવોની વચ્ચે ધાતુનો તાર ફેરવવાથી વિદ્યુત શક્તિ પેદા થાય છે. ગુરુત્વાકર્ષણ અને વિદ્યુતબળો "ઈન્વર્સ સ્કવેર લો" અનુસરે છે. વેદમાં ગ્રહોના વલયો લંબગોળ છે. વેદ અનુસાર બાઈનરી લોજીકથી અત્યાધુનિક ગણતરીની નવી રીતો વિકસાવી શકાય છે.

આયુર્વેદ અને ધનુર્વેદ જેવા ઉપવેદોમાં અનુક્રમે ચિકિત્સા શાસ્ત્ર અને યુદ્ધ શાસ્ત્ર વિષે જ્ઞાન આપવામાં છે. વેદથી મોટું વૈજ્ઞાનિક પુસ્તકાલય હજુ સુધી મને મળ્યું નથી.

ઘણાં ધર્મ સંપ્રદાયો આવા વૈજ્ઞાનિક અભિગમને ઈશ્વર-નિંદા માને છે. આ ધર્મ સંપ્રદાયોમાં તેમના ઈશ્વર, ધર્મગ્રંથ કે દેવદૂત સામે તર્કપૂર્ણ અને વૈજ્ઞાનિક પ્રશ્નો પૂછનારને સખત દંડ આપવામાં આવે છે.

વેદમાં સાચી ધર્મનિંદા અને ઈશ્વરનિંદાને ખુલ્લી છુટ છે. વેદ કહે છે કે મુક્ત ચિંતન, અને વૈજ્ઞાનિક અને તર્કપૂર્ણ અભિગમ રાખનાર ઈશ્વરની વધુ નજીક હોય છે.

સત્ય ૮ "વૈદિક સંસ્કૃત" વેદ સંહિતાની ભાષા છે.

વેદ સંહિતાઓ વ્યવહારિક અને લૌકિક સંસ્કૃતમાં નહીં, પણ વૈદિક સંસ્કૃતમાં લખાયેલી છે. વૈદિક સંસ્કૃત આ સંસારની બધી ભાષાઓનોની જનની છે. વેદનું અધ્યયન કરવા અને તેનું સાચું અર્થઘટન કરવા માટે વૈદિક સંસ્કૃતનું યથાયોગ્ય જ્ઞાન હોવું ઘણું આવશ્યક છે.

(पृष्ठ 7 का शेष)

युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम॥

यजु. 40/16

हे परमात्मदेव! मुझे सुपथ पर ले चलो। मैं बार-बार इसी की याचना करता हूँ।

और सोलहवीं सीढ़ी है **'भस्मान्तं शरीरम्'** (यजु: 40/15) अर्थात् **'अन्त्येष्टि'**। इन सोलह संस्कारों की संक्षिप्त चर्चा के उपरान्त वानप्रस्थ संस्कार (आश्रम) पर थोड़ा और विचार करने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार व्यक्ति जब आयु में बड़ा होने लगता है तो उसे प्रौढ़ की संज्ञा दी जाती है। अंग्रेजी में इसका पर्याय है (Matured)। सरकार की ओर से आयु की दृष्टि से वरिष्ठ नागरिक (Senior Citizen) को कुछ सुविधाएँ अवश्य दी जाती हैं परन्तु क्या आयु में बड़ा होने से उसमें बड़प्पन (Maturity) आ जाता है। Seniority और Maturity दो अलग-अलग अवस्थाएँ हैं। जो आयु में वरिष्ठ हो उसमें बड़प्पन भी हो यह आवश्यक नहीं और इसी प्रकार बड़प्पन के गुण को धारण करने वाला आयु में भी बड़ा हो, यह अनिवार्य नहीं। फ़ारसी में एक कहावत है: **बुजुर्गी ब अकल अस्त, न ब साल। तवानगी ब उमर अस्त, न ब माल॥** Maturity is the outcome of intelligence and not years, Seniority is because of age, not riches.

बड़प्पन में ही जीवन का सुख और आनन्द है। प्रौढ़ संस्कार की बात करें तो उस व्यक्ति में Matured Person जैसा व्यवहार दिखना चाहिए न कि Seniority का। प्रौढ़ तो मार्ग दर्शक होता है, अपने अनुभवों के आधार पर वह समाज के हितार्थ कुछ कर गुजरने की चाह लिए रहता है। यदि उसे समाज और परिवार का सिरमौर कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। 'स्व' का त्याग और 'पर' की ओर बढ़ना ही प्रौढ़ता है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना को अपनाने से निराशा नहीं होगी। संस्कृत में एक कहावत है- **न सा सभा यत्र सन्ति न वृद्धाः।**

वृद्धाः न ते यो न वदन्ति धर्मम्॥ नासौ धर्मो यत्र न सत्यमस्ति, न तत् सत्यं यच्छलेनाभ्युपेतम्॥

अस्तु! प्रौढ़ व्यक्ति को सत्संग, स्वाध्याय, सेवा, परोपकार, दान आदि से अपने जीवन को सुखी, शान्त और सन्तुलित बनाना चाहिए इसी से जीवन में समरसता भी आएगी। निराशा दूर होगी और आत्मिक शक्ति बढ़ेगी। प्रौढ़ व्यक्ति का यही कर्तव्य-पथ है:

संसार दु:ख दलनेन सुभूषिता ये धन्या नरा विहित कर्म परोपकाराः। इसलिए आइए। हम वरिष्ठ (Senior) न बनकर प्रौढ़ (Matured) बनें। नर सेवा हमारी वरिष्ठता को प्रौढ़ता में परिवर्तित कर यह सीख देती है कि सेवा मात्र उपकार नहीं अपितु समाज के प्रति आभार व्यक्त करने का एक माध्यम है।

किसी शायर ने ठीक ही कहा है-

ये शामे जिन्दगी इसे हंस के गुज़ारिए।
रस्ता है बड़ा कठिन, मगर हिम्मत न हारिए।

- सुशान्त लोक-1, गुरुग्राम-122009 (हरियाणा)

(पृष्ठ 8 का शेष)

स्रोत ईश्वर को स्वीकार कर चुका है-वह भी वैज्ञानिक विवशताओं के कारण। पौधों की कोशिका घास व आकृति विज्ञान के विशेषज्ञ डॉ. हरविंग विलियम नौब्लॉक अपने लेख-'कोरे जड़वाद से काम नहीं चलेगा' में लिखते हैं-''मैं परमात्मा में इसीलिए विश्वास करता हूँ क्योंकि चीजें जिस रूप में भी हैं, उनकी तर्क संगत व्याख्या केवल परमात्मा की दिव्य सत्ता को मानकर ही की जा सकती है''। अमेरिका के चिकित्सक एवं प्रख्यात साहित्यकर डॉ. ओलिवर बेण्डेल होम्स लिखते हैं 'ज्यों-ज्यों ज्ञान बढ़ता जा रहा है। ठीक प्रकार से ग्रहण किया जाए तो विज्ञान सर्वोच्च सत्ता में विश्वास को अधिकाधिक सम्भव बनाता जा रहा है।'' वर्णक्रम विकिरण, ज्यामितिक और भौतिक प्रकाशिकी विशेषज्ञ डॉ. जार्ज अर्ल डेविस तो परमात्मा के स्वरूप वर्णन तक बढ़ जाते है। 'वैज्ञानिक खोजों के संकेत ईश्वर की ओर' में वे लिखते हैं-'मैं ऐसे परमात्मा के बारे में विचार करना पसन्द करता हूं, जिसने चराचर जगत को पैदा किया है, किन्तु स्वयं जगत नहीं है।.... वह इस जगत पर शासन करता है और स्वयं इसमें अनुप्रविष्ट है''। वैदिक संस्कृति का स्वल्प जानकर भी आनन्दित होकर कह उठेगा कि जार्ज अर्ल यजुर्वेद के 40 वें अध्याय के पहले मन्त्र 'ईशावास्यामिदं सर्व यत्किञ्च जगत्याञ्जगत्' की व्याख्या कर रहे हैं।

वैदिक धर्म वैज्ञानिक धर्मः- वेदों के विज्ञान सम्मत भाष्य कार महर्षि दयानन्द सरस्वती वेदों को सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ बताते हैं। वे लिखते हैं-वेद के चार विषय हैं-विज्ञान काण्ड, कर्मकाण्ड, उपासना काण्ड और ज्ञान काण्ड। इन सबमें विज्ञान काण्ड मुख्य है क्योंकि उसमे परमेश्वर से लेकर तृण तक सब पदार्थों का साक्षात् बोध हो जाता है।'' इस पर टिप्पणी करते हुए प्रख्यात् योगी अरविन्द लिखते हैं-'दयानन्द के इस विचार में चौंकने की कोई बात नहीं है। मेरा विचार तो यह है कि वेदों में विज्ञान की ऐसी बातें भी है जिन का पता आज के वैज्ञानिकों को नहीं चला है।'' विज्ञान का जिस धर्म से सदियों संघर्ष चला था, वह धर्म के नाम पर पाखण्डों का पुलिन्दा था। आश्चर्य की बात तो यह है कि वैज्ञानिक सिद्धान्तों के पूर्णत: प्रतिकूल रहने और विज्ञानवादियों को जलाने-मारने वाले धर्म आज विज्ञान दम्भियों के साम्राज्यवाद के दम्भ अभियान बने हुए हैं और भारत के वैदिक धर्म को आज भी लाञ्छित किया जा रहा है, जो पूर्णत: वैज्ञानिक है। हमारी संस्कृति का मूल आधार वेद हैं इसीलिए इसे वैदिक संस्कृति कहते हैं। हम नि:संकोच घोषणा करते हैं कि पुराण एवं तदाधारित साहित्य वैदिक धर्म और संस्कृति का मान्य अंश नहीं है। महर्षि मनु की घोषणा है-'धर्म परम प्रमाण हैं। मनु का स्पष्ट कथन है-**'वेद प्रतिपादितो धर्मः अधर्मस्तद-विपर्ययः'** वेद जो कहते हैं वह धर्म है, इसके विपरीत अधर्म है। वेद आधारित धर्म का स्वरूप देखिए-'धर्म तो पक्षपात रहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण करना, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर ईश्वराजा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों अर्थात् मनुष्य मात्र का एक ही है''! और देखें-जिसको सत्पुरुष, राग-द्वेष रहित विद्वान, अपने हृदय के अनुकूल जानकर सेवन करते हैं, उसी पूर्वोक्त को तुम धर्म जानो''। वैदिक धर्म में तर्क व विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी नहीं-ऋषियों की घोषणा है-**'यस्तर्केण अनुसन्धत्ते स धर्म वेद नेतरः'** जो तर्क से सिद्ध हो सके वही धर्म है, इतर नहीं। **'नहि सत्यात्परोधर्मः नाऽनृतात् पातकं परम'** जैसी घोषणाओं के होते हुए भी देश में अन्ध-विश्वासों का प्रचलन और तर्कशीलता के नाम पर धर्म का विरोध, भारत जैसे धर्म-प्राण देश के लिए राष्ट्रीय अभिशाप से किसी भी अंश में कम नहीं है।

गांव-सूरोता, पत्रा-अव्तर, जनपद, भरतपूर (राजस्थान)-321001

(पृष्ठ 1 का शेष)

में तथाकथित गुरु, सन्त, साधु, महात्मादि अपनी दुकानें चला रहे हैं। ये वक्त केवल ब्रह्मचारी के लिए ही नहीं अपितु सब मनुष्यों पर लागू हैं क्यों कि स्वाध्याय के अभाव में मनुष्य विद्या प्राप्ति से वंचित रह जाता है। श्रावणी पर्व में स्वाध्याय का विशेष महत्व होने से इस पर्व में वैदिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का प्रारम्भ करना चाहिए जिसका समापन साढ़े चार महीनों के पश्चात् किया जाता है। श्रावणी पर्व, श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता, वैसे यह पर्व पूरे दो मास तक चलता है। श्रावणी पर्व का ऋतु चक्र से घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्रावण पूर्णिमा के दिन ही यज्ञ की पूर्णाहुति देने से पहले सभी स्त्री पुरुष अपने यज्ञोपवीत को बदलते हैं।

यज्ञोपवीत की प्रतीज्ञा एक श्रेष्ठ संकल्प है। एक ऐसा संकल्प है जिससे हम अपने जीवन को आदर्श बनाते हैं और अपने परिवार, समाज तथा राष्ट्र को ऊँचा उठाने के लिए कठिन से कठिन परिश्रम कर पुरुषार्थ करने का संकल्प लेते हैं। अपने जीवन में अण्डे, मांस, शबाब, कबाब, बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, पान-मसाला इत्यादि का सेवन न करने का संकल्प लेते है और वर्तमान में समाज सुधार में जुटी, सार्वभौमिक सिद्धान्त से परिपूर्ण संस्था 'आर्यसमाज' के साथ निरंतर सम्पर्क में रहकर अपने जीवन में आगे बढ़ने, का संकल्प लेते हैं।

रक्षाबन्धन: इतिहास गवाह है कि श्रावणी पर्व के दौरान चित्तौड़ की 'महारानी कर्णावती' ने अपनी रक्षार्थ मुगल बादशाह हुमांयू को भाई मानकर उससे सहायता मांगी थी और भाई-बहन के स्मृतिचिन्ह के रूप में एक राखी बनाकर भेजी थी हुमायूं ने राखी की लाज रखी और भाई के नाते अपना कर्तव्य निभाया और बहादुरशाह पर आक्रमण करके अपनी बहन कर्णावती की सहायता की और चितौड़ को बचाया। तब से यह प्रथा चल पड़ी और अब तो यह फैशन बन गया है कि बहनें अपने भाइयों तथा पिता की कलाई पर राखी बांधती हैं और गिफ्ट प्राप्त करती हैं। रक्षा बन्धन का चलन एक स्वस्थ परम्परा बन गई है जिससे एक ओर भाई-बहन का विश्वास और प्रेम सुदृढ़ होता है और दूसरी ओर लड़कियाँ/महिलाएं गैर पुरुषों को अपना भाई बनाकर समाज में पनपती कुरीतियों को समाप्त करने में सहायता कर रही हैं रक्षा बन्धन के त्यौहार के कारण विभिन्न सम्प्रदायों के बीच में भाई-चारे का वातावरण बनता है और आपसी विश्वास का रिश्ता पुख्ता होता है। उपरोक्त सभी तथ्यों को ध्यान में रखकर श्रावणी पर्व के अवसर पर देश-विदेश की सभी आर्यसमाजों में हर्षोल्लास से वैदिक प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं आप भी वहां जायें और अपने समय का सदुपयोग कर जीवन को सफल बनाए। ईश्वर आप के घरों में सुख, समृद्धि, आनन्द का अथाह संचार करे इसी कामना के साथ लेखनी को यहीं विराम देता हूँ।

-सैनी मौहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-110061

जीवन में प्राणायाम की उपयोगिता

❒ प्राध्या. जय प्रकाश आर्य

'प्राणायाम' शब्द 'प्राण' और 'आयाम' दो शब्दो का योग है। प्राण का अर्थ सांस, जीवन, शक्ति, ऊर्जा है तथा आयाम का अर्थ विस्तार, लम्बाई, नियम, विरोध व नियन्त्रण है। इस प्राणायाम का अर्थ हुआ प्राणों=सांसों पर नियन्त्रण या विस्तार। बिना प्राण=सांस के शरीर शव कहलाता है। प्राण के द्वारा ही शरीर में जीवनी शक्ति का संचार होता है। प्राणायाम प्राचीन ऋषियों की मानव समाज के लिए एक बहुमूल्य देन है। यह एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है। योग्य मार्गदर्शक=गुरु के निर्देशन में इसका अभ्यास करने से मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इसे **श्रद्धा पूर्वक करने से व्यक्ति का स्थूल शरीर निरोग, सूक्ष्म शरीर निर्मल और कारण शरीर उज्जवल होता है।** इसका वर्णन महर्षि मनु ने मनु स्मृति में इस प्रकार किया है **''दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मला:। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषा: प्राणस्य निग्रहात॥''** इसका अर्थ है कि जिस प्रकार धातुओं के मैल अग्नि में तपाने से नष्ट हो जाते है उसी प्रकार प्राणायाम से सभी इन्द्रियों के=ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मोन्द्रियों के सभी दोष नष्ट होकर प्राण नियन्त्रण में हो जाते हैं। इतना ही नहीं योग के आठ अंगो में प्राणायाम का महत्वपूर्ण स्थान है। योग ऋषि पतञ्जलि ने योगदर्शन के साधनापाद के 52 सूत्र में **''तत: क्षीयते प्रकाशावरणम्''** के द्वारा बतलाया है कि प्राणायाम के नियमित अभ्यास से प्रकाशावरण क्षीण होने लगता है। इसका अभिप्राय यह है कि मन, बुद्धि, चित पर जो काम, क्रोध, लोभ, मोह रूप अज्ञान का आवरण होता है, वह प्राणायाम से दूर हो जाता है तथा मनुष्य में अच्छे संस्कारों का प्रादुर्भाव होना प्रारम्भ हो जाता है। युग पुरुष महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं-**'जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उतरोत्तर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता जाता है। जब तक मुक्ति न हो तब उसके आत्मा का ज्ञान बराबर बढ़ता जाता है।''** इसके साथ ही 'प्राण अपने वश में होने से मन और इन्द्रियां भी स्वाधीन होते हैं। बल पुरुषार्थ बढ़कर बुद्धि तीव्र सूक्ष्म रूप हो जाती है, जो कठिन और सूक्ष्म विषय को शीघ्र ग्रहण करती है।' प्राणायाम जैसे महत्वपूर्ण विषय पर वेदों में भी प्रकाश डाला है। अथर्व वेद में प्राण से मैत्री व प्राण साधना का सन्देश कई मन्त्रों से मिलता है। ऋग्वेद में इसकी विस्तार से चर्चा की गई है। इतना ही नहीं इस पर गीता, रामायण, उपनिषद के अतिरिक्त भारतीय वाङ्मय का बहुत बड़ा भाग इसकी महिमा का बखान कर रहा है। यहाँ तक के प्राण को पिता, माता, आचार्य भ्राता के अलंकारों से सुशोभित किया गया है। अत: इस आधार पर प्राणायाम की उपयोगिता बहुत बढ़ जाती है। प्राणायाम से रक्त शुद्ध होने से शरीर के आन्तरिक अवयव शुद्ध हो जाते हैं जिससे तनाव व असंयम से छुटकारा मिल जाता है। इतना ही नहीं वात, पित, कफ की विशमता दूर हो जाती है। परिणाम स्वरूप मन पवित्र होकर संयमित हो जाता है। जिससे मानव के स्वभाव में भी बहुत बड़ा परिवर्तन आ जाता है। इससे उसके हृदय में करूणा, मुदिता, दय, परोपकार जैसे सात्विक विचार उदित होते हैं। सात्विक विचारों के कारण वह ईमानदार, राष्ट्रभक्त तथा प्रभुभक्त बन जाता है। इतना ही नहीं प्राणायाम को श्रद्धापूर्वक अभ्यास करने से व्यक्ति के चरित्र का भी विकास होता है। चरित्रवान व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज को उन्नत कर सकता है।

- एम.ए. (हिन्दी, राज. शास्त्र) एम. एड. प्रधान आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल

प्रार्थना- हे परमात्मन्! हीरे, मोती, मणि आदि से पूर्ण जो चार दिशाओं में स्थित समुद्र हैं, हम उपासकों के लिए वह प्राप्त कराइये। किसी वस्तु की अप्राप्ति से हम कभी दु:खी न हों। आपकी कृपा से प्राप्त धन को, वेद विद्या की वृद्धि और आपकी भक्ति और धर्म प्रचार के लिए ही लगावें।

You will face
many defeats in life,
but never
let yourself be defeated.

टंकारा समाचार जुलाई 2023
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2021-22-23
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2023
Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-07-2023
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.06.2023

भारत के सरताज

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच-सच

For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। **संपादक : अजय**